॥ ॐ श्री सद्गुरुवे नमः ॥

अमृत प्रार्थना

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा कराई प्रार्थना

सद्गुरू स्वामी अमृत प्रकाश जी महाराज

हे प्रभु ! हे अन्तर्यामी ! हे जगतपते ! हे सर्व सामर्थ्यशाली !
सुना है कि गोमाता मांस नहीं खाती है । वह मांसाहारी नहीं है ।
लेकिन जब वह अपने बछड़े को जन्म देती है तो वह अपनी जिव्हा से
उस शरीर के जेर को चाट जाती है ।
यदि ग्वाला ध्यान ना दे, तो उसके उपरांत जो मांस का पिंड निकलता है,
वह उसे भी खा जाएगी । वह अपने बच्चे की रक्षा के लिए बड़ी तत्पर रहती है ।
मानो वह मांसाहारी ना होते हुए भी उस दिन मांसाहारी हो जाती है । लेकिन
उसे दोष नहीं लगता है । ठीक उसी प्रकार से अध्यात्म में, भक्ति मार्ग में अभी
हमारा जन्म हुआ है और हम अपने पापों से लिपायमान हैं । जब तक साँप
केचुल का त्याग नहीं करता तब तक वह दौड़ नहीं पाता । वैसे ही पाप से,
दोषों से हम लिपटे हुए हैं, लदे हुए हैं ।
इसलिए अध्यात्म में हमारी गति नहीं हो पा रही । हम चल नहीं पा रहे ।
लेकिन जिस प्रकार से गो माता अपने बछड़े की जेर को चाट जाती है, वैसे ही
हे प्रभु ! आप भी हमारे पापों को चाट जाएँ । जैसे नरसिंह भगवान ने
भक्त प्रहलाद के पापों को, हिरण्यकश्यप को मारकर उसके रक्त का
पान किया था । मानो भक्त प्रहलाद के पापों को चाट गए ।
वैसे ही हे प्रभु ! हे शरणागत वत्सल ! हम भी आपकी शरण में आए हैं,
हमारी रक्षा करें ! रक्षा करें ! रक्षा करें !

हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ

॥ हरी ॐ ॥

गीताजी स्तुति

श्री श्री 1008 स्वामी आत्म प्रकाश जी महाराज

गीता हृदय भगवान का सब ज्ञान का शुभ सार है ।
इस शुद्ध गीता ज्ञान से ही चल रहा संसार है ॥ १॥

गीता परम विद्या सनातन सर्व शास्त्र प्रधान है ।
परब्रह्म रूपी मोक्षकारी नित्य गीता-ज्ञान है ॥ २॥

इस मोह माया कष्ट से तरना जिसे संसार हो ।
वह बैठ गीता नाव में सुख से सहज में पार हो ॥ ३ ॥

संसार के सब ज्ञान का यह ज्ञानमय भंडार है ।
श्रुति उपनिषद् वेदान्त ग्रंथों का परम शुभ सार है ॥ ४ ॥

गाते जहाँ जन नित्य 'हरिगीता' निरंतर नेम से ।
रहते वहीं सुखकंद नटवर नंदनंदन प्रेम से ॥ ५ ॥

गाते जहाँ जन गीत गीता प्रेम से धरि ध्यान हैं ।
तीरथ सभी भव के वहीं शुभ शुद्ध और महान है । ६ ॥

धरते हुए जो ध्यान गीता ज्ञान का तन छोड़ते ।
लेने उन्हें माधव मुरारी आप ही उठ दौड़ते ॥ ७ ॥

सुनते सुनाते नित्य जो लाते इसे व्यवहार में ।
पाते परम पद ठोकरें खाते नहीं संसार में ॥ ८ ॥

हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ हरी ॐ